कथा सरिता

अन्न की अहमियत

एक बार की बात है रामपुर गांव में सुधा नाम की एक लड़की रहती थी। वह देखने में बहुत सुन्दर थी। लेकिन उसकी एक आदत खराब थी कि वह खाना खराब करती थी। वह ज़्यादा खाना लेकर खाना फेंक देती थी।

कुछ समय बाद उसकी शादी हो गयी। उसकी सास ने उसको तिजोरी की चाबी और बाकी सभी ज़िम्मेदारी सौंप दी और बोला कि वह अभी तक अच्छे से घर चलाती आयी है। अब सुधा को सही से घर चलाना है।

सुधा ने अपनी सास की बात को कबूल किया। सुधा इसके बाद अपने पति से बार-बार कभी चीनी, कभी चावल और कभी दाल मंगवाती थी। जब उसकी सास को इस बारे में पता चला तो वह सुधा को बोली कि तुम महीने भर का राशन एक बार में क्यों नहीं मंगवाती।

सुधा ने बताया कि वह एक साथ मंगवाती हैं, लेकिन वह कम पड़ जाता है। सुधा की सास ने इस बात का पता लगाने के लिए कि राशन कहाँ जाता है, रसोई में थोड़ी नज़र रखनी शुरू कर दी।

कुछ दिन रसोई में देखने पर उसका पता चला कि सुधा ज़्यादा खाना बनाती थी जिससे बहुत सारा खाना फ्रिज में पड़ा रहता था। उसने सुधा को खाने की अहमियत के बारे में सिखाने की सोची।

एक दिन उसने सुधा को बुलाकर कहा कि हमारे पहले वाली नौकरानी के बच्चे की तबियत ठीक नहीं है मुझे वहाँ जाना है, क्या तुम भी चलोगी? सुधा भी अपनी सास के साथ जाने के लिए तैयार हो गयी।

अपनी नौकरानी की बस्ती में जाकर सुधा की सास ने कहा कि मैं रास्ता पूछ कर आती हूँ। इसके बाद सुधा वहीं खड़ी रही। सुधा ने एक घर के अंदर देखा तो एक छोटा बच्चा भूख के कारण रो रहा था। उसकी माँ ने अपने अनाज के सभी बर्तन देखे लेकिन वो खाली थे। यह देखकर सुधा को रोना आ गया। कुछ देर बाद उसकी सास आयी और उसको अपनी नौकरानी के घर ले गयी। नौकरानी के घर जाने पर उसका लड़का बीमार लेटा हुआ था।

जब सुधा ने बीमारी का कारण पूछा तो नौकरानी ने कहा कि वह एक घर से बचा हुआ भोजन लेकर आयी थी, लेकिन उसको नहीं पता था कि वह खाना खराब था। जिससे उसके बेटे की तबियत खराब हो जाएगी। यह कहकर वह रोने लगी। कुछ देर के बाद सुधा और उसकी सास अपने घर आ गए। घर आने पर सुधा अपनी सास के गले लग कर रोने लगी। जब उसकी सास ने कारण पूछा तो सुधा ने बताया कि मैं खाने को कितना बर्बाद करती थी और किसी को खाने के लिए दो वक्त की रोटी भी नहीं है। उसने कहा कि अब से वह खाने को कभी बर्बाद नहीं करेगी। सुधा को खाने की कीमत महसूस होने पर उसकी सास खुश थी।

शिक्षा : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अन्न को कभी बर्बाद नहीं करना चाहिए।

माँ की इच्छा

एक बार की बात है, लालपुर गांव में तीन भाई गजेन्द्र, राजेन्द्र और सुरेन्द्र रहते थे। उनकी आपस में बिल्कुल भी नहीं बनती थी और वो आपस में लड़ते रहते थे। उनके पिता की मृत्यु जब वे छोटे थे तभी हो गयी थी। वह तीनों अपनी माँ के साथ रहते थे। वे अपनी माँ की खेती में मदद करते थे और अपने घर का गुजारा चलाते थे। एक दिन उनकी माँ बहुत बीमार हो गयी।

उनकी माँ ने तीनों भाईयों को बुलाया और कहा कि मैं शायद अब ज़्यादा समय तक ज़िंदा न रह सकूंगी। लेकिन मेरी एक इच्छा है, क्या तुम उसको पूरा करोगे? तीनों भाईयों ने माँ की इच्छा के बारे में पूछा। माँ ने बोला मैं यह चाहती हूँ कि तुम सब एक बड़ा घर बनाओ और साथ में रहो।

तुम सब खूब तरक्की करो। उनकी यह बात सुनकर गजेन्द्र ने बोला कि ठीक है माँ हम आपकी इच्छा को पूरा करेंगे। लेकिन तुम बस जल्दी से ठीक हो जाओ। इसके बाद वह बाहर चले गए। बाहर जाकर राजेन्द्र-गजेन्द्र से बोला कि तुमने माँ से यह क्यों बोला कि हम साथ रहेंगे।

मैं तुम्हारे साथ नहीं रहने वाला, सुरेन्द्र भी बोला मैं भी तुम दोनों के साथ नहीं रहने वाला। तुमको माँ को सच बोलना चाहिए था। कुछ दिनों के बाद उनकी माँ की मृत्यु हो गयी। इसके बाद उन्होंने सोचा माँ की आखिरी इच्छा थी, अच्छा बड़ा घर बनाने की।

तीनों भाईयों ने जो भी पैसा था उसको तीन भागों में आपस में बाँट लिया। इसके बाद तीनों अपना-अपना घर बनाने के लिए चल पड़े। राजेन्द्र ने सोचा कि वह बांस और फूस का घर बनाएगा और बाकी पैसे का कुछ सामान खरीद लेगा।

उसने ऐसा ही किया। वह जाकर बांस और फूस ले आया और अपना घर बनाने लगा। दूसरा भाई सुरेन्द्र ने अपना घर लकड़ियों से बनाने की सोची, वह जाकर लकड़ियां ले आया और अपना घर बनाने लगा। तीसरा भाई गजेन्द्र ने अपना घर पत्थर का बनाने की सोची, वह जाकर पत्थर और सीमेंट ले आया। लेकिन उसके सारे पैसे खत्म हो गए। फिर उसने कुछ समय खेत में काम करके पैसे कमाए जिससे वह बाकी सामान भी ले आया।

इसके बाद उसने खुद घर बनाना शुरू किया और कुछ महीनों में उसका घर बनकर तैयार हो गया और वह इससे बहुत खुश हुआ। कुछ दिनों के बाद बहुत बड़ा तूफान आया जिससे राजेन्द्र और सुरेन्द्र के घर नष्ट हो गए। दोनों भागे-भागे गजेन्द्र के घर आए और शरण ली। वह दोनों बहुत शर्मिंदा थे, लेकिन उसके बाद उन्होंने साथ में रहने का निर्णय किया।

पलवल-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षक केन्द्र शहर पंचवटी में लगाये वैक्सीन शिविर का उद्घाटन विधायक दीपक मंगला ने किया। साथ में उपस्थित रहे स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. राजेन्द्र तथा ब्र.कु. मनीषा।

भीनमाल-राज.। विश्व स्वास्थ्य दिवस पर नाहर बैंक्वेट हॉल में, यूथ फॉर ग्लोबल पीस प्रोजेक्ट के तहत 'हेल्थ इज़ वेल्थ' विषय पर ब्रह्माकुमारीज़ एवं यूथ विंग,आर.ई.आर.एफ. द्वारा आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता, वैलनेस एजुकेटर एवं मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. विवेक मोदी,हैदराबाद, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष सावलाराम देवासी, एडवोकेट नागराज पुरोहित, ब्र.कु. सुनीता,रानीवाड़ा, कृष्णा हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. प्रेमराज परमार, बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. विनोद वरड़े, दंत रोग विशेषज्ञ डॉ. अक्षय बोहरा, ब्रह्मगुप्त योग समिति अध्यक्ष एवं विद्या भारती के प्रदेश प्रमुख डॉ. श्रवण मोदी, भारत विकास परिषद के संरक्षक नेनाराम चौहान, एडवोकेट दिनेश खंडेलवाल, वरिष्ठ पत्रकार एवं मारवाड़ चेतना के संपादक कन्हैयालाल खंडेलवाल तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ग्वालियर-म.प्र.। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में शहर के चिकित्सकों के लिए डॉ. शिवशंकर एवं डॉ. साधना शंकर के निवास पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. डॉ. गुरचरण, लश्कर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. प्रहलाद, पूर्व डीन डॉ. शैला तथा मेडिकल कॉलेज डीन डॉ. एस.एन. आयंगर।

पांडव भवन-माउण्ट आबू। चारों धाम के अवलोकन व ज्ञान चर्चा के पश्चात चित्र में महंत प्रद्युमन चमन जी, ब्र.कु. शशिकांत, ब्र.कु. रविकुमार तथा अन्य उनके शिष्यगण।

राजेन्द्र नगर-जम्मू। आध्यात्मिक कार्यक्रम में मंचासीन हैं मेयर चन्द्रमोहन गुप्ता, ब्र.कु. सुदर्शन दीदी, ब्र.कु. रविन्द्र, ब्र.कु. कुसुम लता,बनतालाब।

हाथरस-आनन्दपुरी(उ.प्र.)। विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर यूथ फॉर ग्लोबल पीस के अंतर्गत युवा प्रभाग द्वारा प्रेम रघु आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज में 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में उपस्थित रहे ब्र.कु. शान्ता दीदी, ब्र.कु. मोनिका, क्षेत्राधिकारी पुलिस रूचि गुप्ता, नगरपालिका अध्यक्ष आशीष शर्मा तथा पैरामेडिकल कॉलेज के निदेशक डॉ.पी.पी. सिंह, प्रधानाचार्या रेनुका जी।